लाइबनीज का ईश्वर विज्ञान (अन्तिम भाग)

Theology of Leibniz (Final Part)

⟹ पिछले भाग में हमनें लाइबनीज के द्वारा दिए गए चार प्रमाणों के बल पर ईश्वरीय अस्तित्व को प्रमाणित किया है। उसके बाद हमलोग लाइबनीज के ईश्वरीय स्वरूप की व्याख्या कर रहे थे। इस भाग में हम लोग ईश्वरीय स्वरूप की आगे की व्याख्या करेंगें।

ईश्वर निर्माणकर्त्ता है पर वह साधारण निर्माता नहीं। वह एक अत्यन्त ही चतुर, कुशल एंव निपुण निर्माता है। उसने विश्व की रचना एक साधारण घड़ीसाज की तरह नहीं की है जिसे बार-बार घड़ियों को सुधारने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ता है बल्कि ईश्वर ने एक ऐसे संसार की रचना की है जहाँ चिद्‌बिन्दुओं के बीच का आपसी सामन्जस्य निरन्तर बना रहता है। मन और शरीर सदा एक दूसरे के सहचरी

बने रहते है। उनमें न तो कोई अव्यवस्था आती है और न ही उसे व्यवस्थित करने के लिए ईश्वरीय हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

चिदबिन्दुओं के निर्माण से पूर्व ही उसे इसके स्वरूप का ज्ञान था क्योंकि वह मानवीय बुद्धि से परे अत्यन्त ही सुबुद्ध है। इसलिए उसने उनके आपसी मेल हेतु पूर्व से ही एक सामन्जस्य की स्थापना कर दी थी। यह कहना पूर्णतः गलत है कि ईश्वर ने अज्ञानता में इस विश्व की रचना की है।

यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि यदि ईश्वर में ज्ञान है, वह विद्यापूर्ण, सद्गुण सम्पन्न एवं शुभ का भंडार है तो विश्व में अशुभ क्यों है, और क्या इन अशुभों के रहते हुए भी इस विश्व को सभी संभव जगत में श्रेष्ठ (The best of all possible world) कहा जा सकता है?

लाइबनीज ने अशुभ को ईश्वरीय अभिशाप के रूप में नहीं माना है। उन्होंने अपनी विख्यात पुस्तक 'Theodicee' में तीन प्रकार के अशुभ की चर्चा की है। तात्विक अशुभ (metaphysical evil), नैतिक

अशुभ (Physical evil) तथा नैतिक अशुभ (Moral evil)

तात्विक अशुभ का अर्थ यह है कि ईश्वर ने चिद्बिन्दुओं का निर्माण किया है जो शरीर शारीरिक और मानसिक सीमाओं में बंधे है। इनका सीमाबद्ध होना ही इनके लिए अशुभ है। भौतिक अशुभ मानव को एक दिशा निर्देशक के रूप में अपनी भूलों को सुधारने एवं व्यवहारों को ईश्वरीय विधान के अनुकूल ढालने की सीख और सलाह देता है।

नैतिक अशुभ की व्याख्या करते हुए लाइबनीज ने कहा है कि ईश्वर ने मानव को संकल्प-स्वातन्त्र्य (freedom of will) दिया है, उसने उसे इस बात की पूर्ण स्वतन्त्रता दी है कि वह अपनी बुद्धि के अनुसार शुभाशुभ के बीच चुनाव करे। पर जब मानव ने ईश्वर द्वारा दी गई इस छूट का दुरुपयोग किया तो इसके परिणाम स्वरूप ही ईश्वर ने विश्व में नैतिक अशुभ को जन्म दिया। सारांश यह है कि नैतिक अशुभ मानव को ईश्वर द्वारा दी गई स्वतन्त्रता के दुरुपयोग का परिणाम है जिसकी रचना के पीछे ईश्वर का एक मात्र लक्ष्य यह है कि मानव दी गई छूट का सही और बुद्धि-संगत उपयोग करे।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि लाइबनीज ने अशुभ को ईश्वरीय अभिशाप के रूप में नहीं मानकर इसे मानव के लिए एक दिशा निर्देशक के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। अशुभ की रचना ईश्वरीय क्षमता, विचारशीलता अथवा कार्य-दक्षता का खण्डन नहीं वरन् ईश्वरीय दूरदर्शिता एवं सोच-समझ का प्रमाण है।

लाइबनीज के अनुसार ईश्वर देश, काल एवं परिवर्तन से परे है। देश और काल विभाज्य है क्योंकि इनका गज, फीट, इंच, मिनट आदि रूपों में विभाजन किया जा सकता है। ईश्वर परिवर्तन का विषय भी नहीं है। क्योंकि परिवर्तन का अर्थ विनाश है। ईश्वर को परिवर्तन का विषय नहीं कहा जा सकता। परिवर्तन हर दशा में ससीमता और अपूर्णता का सूचक होता है पर ईश्वर पूर्ण और असीम है।

लाइबनीज द्वारा की गई ईश्वरीय स्वरूप की व्याख्या के सिलसिले में एक प्रश्न यह आता है कि मानव जो छिद्ररहित चिद्-बिन्दुओं से निर्मित है, वह ईश्वर को कैसे जान सकता है? लाइबनीज ने इस प्रश्न के अंत में कहा है कि वस्तुतः मानव के लिए ईश्वरीय स्वरूप को उसकी सम्पूर्णता में जानना सम्भव नहीं। इसका कारण

यह है कि मानव जिन चिद्बिन्दुओं से निर्मित है वह स्तर और विकास की दृष्टि से परम चिद्बिन्दु की तुलना में निम्न कोटि का है। ऐसी दशा में मानव ईश्वर के स्वरूप का अस्पष्ट बोध ही प्राप्त कर सकता है, वह उसे पूर्णतः नहीं जान सकता। हम कह सकते हैं कि मानव जब तक जगत् का सदस्य है उसे ईश्वरीय स्वरूप का केवल धुंधला और अस्पष्ट ज्ञान ही मिल सकता है पर यदि वह चाहे तो ईश्वरीय चिद्बिन्दु की अवस्था को प्राप्त कर सकता है और ईश्वरीय अवस्था की प्राप्ति ही ईश्वरीय स्वरूप का ज्ञान है।

मूल्यांकन → लाइबनीज ने अन्य ईश्वरवादियों की तरह ईश्वरीय अस्तित्व को प्रमाणित करने के साथ ही उसके स्वरूप की विस्तृत एवं तर्कपूर्ण व्याख्या की है। पर यदि समीक्षात्मक दृष्टि से उनके विचारों पर दृष्टिपात करें तो व कुछ गम्भीर असंगतियों के शिकार सिद्ध होते हैं।

इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम उनके द्वारा प्रस्तुत ईश्वरीय प्रमाणों का प्रश्न आता है जहाँ वे अत्यंत ही दुर्बल प्रतीत होते हैं। तात्विक युक्ति का यह मान्यता है कि 'अस्तित्व पूर्णता' का अंग है मान्य नहीं। Kant

ने इस युक्ति की आलोचना करते हुए कहा है कि 'पूर्णता' कभी भी इस बात का सूचक नहीं कि 'अस्तित्व' इसका आवश्यक रचनात्मक तत्व माना जाय।

जहाँ तक विश्व सम्बन्धी प्रमाण का प्रश्न है यह तात्विक युक्ति पर ही आश्रित कहा जायगा क्योंकि यह प्रमाण तात्विक युक्ति से भिन्न कोई नई बात नहीं बताता। वस्तुतः लाइबनीज का यह प्रमाण उसके पर्याप्त हेतु नियम पर निर्भर है जो अस्पष्ट एवं दुर्बोध है।

लाइबनीज का पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम के सहारे ईश्वरीय अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास उन्हें चक्रक-दोष (Petitio-Principi) में फंसा देता है। क्योंकि वे पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम की सत्यता प्रमाणित करने के लिए ईश्वर का सहारा लेते हैं और ईश्वरीय अस्तित्व की प्रमाणिकता के लिए पूर्व स्थापित सामन्जस्य का सहारा लेते हैं। इस प्रकार पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम कभी निष्कर्ष और कभी आधार बनाता है।

लाइबनीज ईश्वर पर मानवीयकरण (anthropomorphism) के पक्ष में नहीं है और

इसी कारण उन्होंने ईश्वर को मानव जगत् के चिद्बिन्दुओं से पूर्णतः भिन्न माना है। लेकिन इसके साथ ही वे यह बताने से भी नहीं चूकते कि ईश्वर ने अपने ज्ञान के आधार पर पूर्व निर्धारित योजना के अनुकूल सर्वोत्तम विश्व की रचना अनेक सम्भव जगत् में चुनाव कर लिया है। पर योजना, चुनाव, इच्छा इत्यादि मानवीय विशेषताएँ हैं और ज्यों ही हम इनका आरोपण ईश्वर पर करते हैं, हम उस पर मानवीकरण का आरोपण कर देते हैं। परिणाम होता है कि ईश्वर सलीम बन जाता है।

फिर यदि धार्मिक दृष्टि से देखा जाय तो लाइबनीज का ईश्वर सम्बन्धी विचार पूर्णतः असान्य प्रतीत होता है। धर्म एक ऐसे ईश्वर की माँग करता है जो मानव से महान् तो हो पर वह उसकी पहुँच से परे न हो, उसके समक्ष मानव अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सके तथा ईश्वर मानवीय भावनाओं के अनुकूल उत्तर दे सके। परन्तु लाइबनीज का ईश्वर एक चिद्रहित चिद्बिन्दु है और मानव स्वयं भी मात्र चिद्रहित चिद्बिन्दुओं का एक व्यवस्थित संयोग है ऐसी दशा में न तो मानव ईश्वर के समक्ष अपनी भावनाओं व्यक्त कर सकता है और न ईश्वर मानवीय भावनाओं

के अनुकूल प्रतिउत्तर ही दे पाने में समर्थ है। अतः लाइबनीज का ईश्वर सम्बन्धी विचार धार्मिक दृष्टि से सन्तोषप्रद नहीं।

Weber और Perry ने लाइबनीज के विचारों को दुविधा के सींगों (horns of dilemma) के शिकार हो जाते है। उनके अनुसार यदि ईश्वर एक चिद्‌बिन्दु है तो फिर ससीम प्राणियों को चिद्-बिन्दु नहीं कहा जा सकता। ⟵

इस प्रकार लाइबनीज के ईश्वरीय स्वरुप की व्याख्या की समीक्षात्मक विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि उन्होंने अत्यन्त ही तर्कपूर्ण ढंग से ईश्वरीय अस्तित्व को प्रमाणित करने एवं उसके स्वरुप की व्याख्या करने का प्रयास किया है पर उसका विचार मानवीय बुद्धि को संतुष्ट नहीं कर पाता।

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.